श्रीकृष्ण का विराट जीवन-दर्शन : प्रेम भी, नीति भी और प्रकृति की चिंता भी

कृष्ण केवल आराध्य ही नहीं, जीवन के हर मोड़ के मार्गदर्शक

नवभारत न्यूज

श्रीकृष्ण केवल भक्ति के आराध्य नहीं, बल्कि जीवन के हर आयाम के मार्गदर्शक हैं. उनका प्रकृति संदेश आज पर्यावरण संरक्षण और संतुलित जीवन के लिए पहले से अधिक प्रासंगिक है. गौड़ीय वैष्णव परंपरा में राधारानी के साथ त्रिभंग मुद्रा में बांसुरी बजाते, पीतांबर धारण किए नंदनंदन कृष्ण का स्वरूप प्रेम और माधुर्य का प्रतीक है- घर से गोलोक की आध्यात्मिक यात्रा का संदेश देता है. गुरु-शिष्य परंपरा और समग्र शिक्षा के आदर्श के रूप में कृष्ण ज्ञान का महत्व बताते हैं. वहीं विधि, न्याय, नीति और लोककल्याण के पथप्रदर्शक कृष्ण भाव, तत्त्व और अध्यात्म के विराट स्वरूप को भी प्रकट करते हैं.

श्रीकृष्ण : भाव, तत्व और अध्यात्म का विराट स्वरूप

श्रीकृष्ण केवल आराध्य देव नहीं, बल्कि भाव, तत्त्व और परम तत्व के अद्भुत समन्वय हैं. उन्होंने मनुष्य रूप में अवतरित होकर अपने जीवन को लोककल्याण और प्रजा के हित के लिए समर्पित किया. कृष्ण का अध्यात्म हमें सिखाता है कि ईश्वर की अनुभूति केवल पूजा-पद्धति में नहीं, बल्कि करुणा, कर्तव्य, प्रेम और धर्म की रक्षा में भी है. महाभारत में कृष्ण का व्यक्तित्व उनकी इसी दिव्य दृष्टि को प्रकट करता है. द्रौपदी की रक्षा हो या पांडवों के प्रति उनका संरक्षण, वे हर परिस्थिति में धर्म और न्याय के पक्ष में खड़े दिखाई देते हैं. उनका जीवन यह संदेश देता है कि सच्चा अध्यात्म पलायन नहीं, बल्कि सत्य और कर्तव्य के मार्ग पर दृढ़ता से चलना है. श्रीकृष्ण भाव के स्तर पर प्रेम हैं, तत्त्व के स्तर पर चेतना हैं और परम तत्व के स्तर पर संपूर्ण सृष्टि के आधार हैं. इसलिए कृष्ण का स्मरण मनुष्य को लोककल्याण की प्रेरणा देता है.

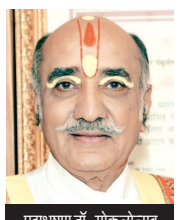
पद्मभूषण डॉ. गोकुलोत्सव महाराज, गोवर्धन नाथ मंदिर

कृष्ण-भक्ति : घर से गोलोक की ओर

गौड़ीय वैष्णव परंपरा में श्रीकृष्ण का मूल स्वरूप राधारानी के साथ त्रिभंग मुद्रा में बांसुरी बजाते हुए, पीतांबर धारण किए हुए नंदनंदन कृष्ण का माना जाता है. भगवद्गीता में भगवान कहते हैं- 'ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्'; अर्थात भक्त जिस भाव से भगवान की शरण ग्रहण करता है, भगवान उसी भाव से उसे स्वीकार करते हैं. इसलिए कृष्ण को समझने का मार्ग केवल बौद्धिक ज्ञान नहीं, बल्कि साधना और प्रेम है. गुरु से प्राप्त ज्ञान, हरिनाम-जप, कीर्तन, भक्तों का संग, श्रीमद्भागवत जैसे शास्त्रों का अध्ययन और ठाकुरजी की सेवा मनुष्य को कृष्ण के निकट ले जाती है. गृहस्थ भक्त भी अपने घर को भक्ति, अनुशासन, नाम-स्मरण, कीर्तन और सेवा से आध्यात्मिक वातावरण दे सकता है. ऐसा घर ही धीरे-धीरे वैकुंठ और गोलोक की अनुभूति कराने वाला बन सकता है.

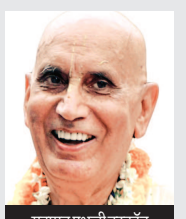
महामन प्रभुजी इस्कॉन मंदिर इंदौर

श्रीकृष्ण : विधि, न्याय, नीति और लोककल्याण के पथप्रदर्शक

श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व केवल आस्था और अध्यात्म तक सीमित नहीं है, बल्कि वह विधि, न्याय, नीति और लोककल्याण की जीवंत व्याख्या है. महाभारत को यदि न्याय और अन्याय के संघर्ष के रूप में देखें, तो श्रीकृष्ण ऐसे मार्गदर्शक के रूप में सामने आते हैं, जो विधि के अक्षर से अधिक उसकी आत्मा और उद्देश्य को महत्व देते हैं. उनके लिए न्याय का अर्थ केवल नियमों का पालन नहीं, बल्कि सत्य की प्रतिष्ठा, निर्बल की रक्षा और अन्याय का प्रतिरोध है. श्रीकृष्ण पहले संवाद, शांति और समझौते का मार्ग अपनाते हैं; किंतु जब न्याय के सभी शांतिपूर्ण प्रयास विफल हो जाते हैं, तब अधर्म के विरुद्ध संघर्ष को आवश्यक मानते हैं. भगवद्गीता में उनका संदेश है कि न्याय करते समय मोह, भय और स्वार्थ से ऊपर उठकर कर्तव्य और धर्म को सर्वोच्च स्थान दिया जाए. वें सिखाते हैं कि न्याय का उद्देश्य लोककल्याण होना चाहिए.

जिला न्यायाधीश हिदायत उल्ला खान

श्रीकृष्ण : गुरु-शिष्य परंपरा और समग्र शिक्षा

श्रीकृष्ण का व्यक्तित्व केवल आध्यात्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि शिक्षा और जीवन-प्रबंधन की दृष्टि से भी अत्यंत व्यापक और प्रेरणादायी है. उन्होंने महर्षि सांदीपनि के आश्रम में गुरु-शिष्य परंपरा के अंतर्गत शिक्षा ग्रहण कर यह संदेश दिया कि सच्ची शिक्षा व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का निर्माण करती है. श्रीकृष्ण द्वारा 64 कलाओं का अध्ययन इसका उत्कृष्ट उदाहरण है. संगीत, नृत्य, पाककला, शस्त्रविद्या, खेल, विज्ञान, पर्यावरण और जीवनोपयोगी विभिन्न कौशलों का ज्ञान व्यक्ति को बहुआयामी बनाता है. आज के विद्यार्थियों के लिए यह दृष्टिकोण विशेष रूप से प्रासंगिक है. केवल एक विषय में दक्षता पर्याप्त नहीं; शिक्षा में कला, संस्कृति, विज्ञान, खेल, प्रकृति और व्यवहारिक ज्ञान का समावेश आवश्यक है. श्रीकृष्ण की शिक्षा हमें ज्ञान के साथ विवेक, कौशल के साथ जिम्मेदारी विकसित करने की प्रेरणा देती है.

राकेश सिंघई, कुलपति देवी अहिल्या विश्वविद्यालय

श्रीकृष्ण का प्रकृति संदेश आज पहले से अधिक प्रासंगिक

भगवान श्रीकृष्ण का जीवन हमें प्रकृति के साथ सामंजस्य और संरक्षण का संदेश देता है. भगवद्गीता में उन्होंने प्रकृति को जीवन-चक्र का आधार बताते हुए जल, अन्न, वनस्पति और जीव-जगत के परस्पर संबंध को समझाया है. उनका संदेश केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि पर्यावरणीय दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है. श्रीकृष्ण की बाल लीलाएं यमुना, वन, गोवर्धन, गौवंश और कदंब वृक्ष से जुड़ी हैं. गोवर्धन पूजा को हम प्रकृति, पर्वत, जल और जैव-विविधता के प्रति कृतज्ञता की प्राचीन भारतीय परंपरा के रूप में देख सकते हैं .आज जब शहरों में वृक्ष कम हो रहे हैं और प्राकृतिक जलस्रोत सिकुड़ रहे हैं, तब श्रीकृष्ण का प्रकृति-सम्मत जीवन हमें चेताता है कि प्रकृति का संरक्षण ही वास्तव में जीवन का संरक्षण है. जन्माष्टमी पर यदि हम एक वृक्ष और एक जलस्रोत की रक्षा का संकल्प लें, तो यही श्रीकृष्ण के प्रति सच्ची आस्था का प्रतीक होगी.

डॉ. दिलीप वाघेला, पर्यावरणविद्

यशोदा माता मंदिर : जन्माष्टमी पर होती है गोद भराई की रस्म

नवभारत न्यूज

इंदौर की ऐतिहासिक गलियों में कई ऐसे मंदिर मौजूद हैं, जो अपने धार्मिक महत्व के साथ-साथ अपनी अनूठी परंपराओं और मान्यताओं के लिए भी पहचाने जाते हैं. इन्हीं में से एक है माता यशोदा को समर्पित 232 साल पुराना मंदिर, जहां आज भी श्रद्धालु पीढ़ियों से चली आ रही परंपराओं को पूरी श्रद्धा के साथ निभाते हैं.

कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण करीब 232 वर्ष पहले कराया गया था। मंदिर में स्थापित प्रतिमाओं की कहानी भी अपने आप में बेहद खास है. मान्यता के अनुसार, यहां स्थापित सभी प्रतिमाओं को जयपुर से बैलगाड़ियों के माध्यम से इंदौर लाया गया था. उस दौर में यह सफर आसान नहीं था. करीब 21 दिनों की यात्रा पूरी करने के बाद ये प्रतिमाएं इंदौर पहुंचीं और विधि-विधान के साथ मंदिर में स्थापित की गईं. मंदिर की सबसे खास परंपराओं में से एक है गोद भराई की रस्म. स्थानीय मान्यता है कि संतान की इच्छा रखने वाले दंपती यदि यहां श्रद्धा के साथ गोद भराई की रस्म करते हैं, तो माता यशोदा की कृपा से उनकी मनोकामना पूरी होती है. यह विशेष रस्म जन्माष्टमी के अवसर पर की जाती है. इसके अलावा वर्षभर किसी भी गुरुवार को भी श्रद्धालु यह रस्म कर सकते हैं. इसी मान्यता के चलते जन्माष्टमी पर मंदिर में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं और माता यशोदा से अपनी मनोकामना पूरी होने की प्रार्थना करते हैं.

मनीष कुमार दीक्षित

आधी रात को होती है महाआरती

मंदिर में जन्माष्टमी का पर्व विशेष उत्साह और भक्ति के साथ मनाया जाता है। मंदिर की सेवा पीढ़ियों से कर रहे पंडित मनीष कुमार दीक्षित बताते हैं कि जन्माष्टमी की रात ठीक 12 बजे महाआरती का आयोजन किया जाता है. इस दौरान मंदिर में भक्तिमय वातावरण के बीच भगवान श्रीकृष्ण के जन्म का उत्सव मनाया जाता है. महाआरती के बाद श्रद्धालुओं को सिंघाड़े के आटे से तैयार की गई पंजीरी की प्रसादी वितरित की जाती है. जन्माष्टमी के अगले दिन मंदिर में नंद उत्सव का आयोजन बड़े उत्साह के साथ किया जाता है.

तीन सौ साल से आस्था का केंद्र है गोपाल मंदिर

नवभारत न्यूज

इंदौर. राजवाड़ा की ऐतिहासिक गलियों में कदम रखते ही शहर के गौरवशाली अतीत की झलक दिखाई देने लगती है. इसी विरासत के बीच स्थित है गोपाल मंदिर, जो करीब 300 वर्षों से कृष्ण भक्ति, आस्था और परंपराओं का साक्षी बना हुआ है. होलकर काल से जुड़ा यह मंदिर आज भी श्रद्धालुओं के लिए विशेष महत्व रखता है.

कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण प्रथम मल्हारराव होलकर ने अपनी पत्नी हड़कूबाई जी की कृष्ण भक्ति को ध्यान में रखते हुए करवाया था. हड़कूबाई भगवान श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त थीं और प्रतिदिन मंदिर आकर भगवान की सेवा-पूजा किया करती थीं. समय बदला, पीढ़ियां बदलीं, लेकिन मंदिर से जुड़ी कृष्ण भक्ति की यह परंपरा आज भी कायम है. गोपाल मंदिर केवल पूजा-अर्चना का स्थान नहीं, बल्कि शहर की लोकआस्थाओं का भी महत्वपूर्ण केंद्र है. श्रद्धालुओं में ऐसी मान्यता है कि मंदिर के बाहर विशेष स्थान पर पीठ रगड़ने से पीठ के दर्द में राहत मिलती है. वहीं, संतान की कामना रखने वाले दंपती यहां नारियल चढ़ाकर भगवान श्रीकृष्ण से मनोकामना करते हैं. भक्तों का विश्वास है कि सच्चे मन से की गई प्रार्थना भगवान तक जरूर पहुंचती है. इन मान्यताओं का अपना कोई वैज्ञानिक प्रमाण भले न हो, लेकिन आस्था की दुनिया में इनका विशेष स्थान है. यही लोकविश्वास इस प्राचीन मंदिर को आम श्रद्धालुओं से भावनात्मक रूप से जोड़ते हैं.

होलकर काल की विरासत

विमल बाई विराट

जन्माष्टमी पर सजता है भक्ति का अनोखा संसार

जन्माष्टमी के अवसर पर गोपाल मंदिर का वातावरण देखते ही बनता है। तपस्वी विमल बाई विराट के अनुसार, इस दिन मंदिर में विशेष अभिषेक किया जाता है. श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ होता है और भगवान श्रीकृष्ण को 56 प्रकार के भोग अर्पित किए जाते हैं. दिनभर चलने वाली पूजा और धार्मिक अनुष्ठानों के बाद श्रद्धालुओं की निगाहें उस पल पर टिक जाती हैं, जब रात के 12 बजते हैं. मंदिर में भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव की खुशी छा जाती है. महाआरती के साथ वातावरण घंटियों, भजनों और जयकारों से गूंज उठता है. इसके बाद भक्तों को माखन-मिश्री की प्रसादी वितरित की जाती है.

कैनवास पर साकार हुआ कृष्ण का मनमोहक स्वरूप

नवभारत न्यूज

इंदौर. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर कलाकार आयुषी भट्टर ने भगवान श्रीकृष्ण के मनमोहक स्वरूप को अपनी कलाकृतियों के माध्यम से कैनवास पर जीवंत किया है. उनके बनाए चित्रों में बाल कृष्ण की निश्छल मुस्कान, मासूम भाव और भगवान कृष्ण की दिव्य आभा को खूबसूरती से उकेरा गया है.

आयुषी भट्टर ने रंगों में उकेरी बाल-कृष्ण की मासूमियत

आयुषी की कलाकृतियों में एक ओर बाल कृष्ण गाय के साथ स्नेहपूर्वक नजर आते हैं, वहीं दूसरी पेंटिंग में मुकुट पर सजे मोरपंख के साथ बांसुरी बजाते कृष्ण का मनोहारी स्वरूप दिखाई देता है. चित्रों में रंगों के साथ चेहरे के भाव, आभूषण और प्राकृतिक परिवेश की बारीकियों पर भी विशेष ध्यान दिया गया है. आयुषी भट्टर का कहना है कि कृष्ण को चित्रित करना उनके लिए केवल एक सुंदर कलाकृति बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि उनके प्रति जुड़ी भावनाओं को कैनवास पर उतारने का अनुभव है. कृष्ण की मुस्कान, आंखों की मासूमियत और उनके स्वरूप से मिलने वाली शांति को हर बार चित्रित करते हुए उन्हें कुछ नया महसूस होता है. उनके अनुसार कला भारतीय संस्कृति और परंपराओं से जुड़ने का एक खूबसूरत माध्यम है. इन चित्रों के जरिए उन्होंने कृष्ण की छवि के साथ उनके व्यक्तित्व से जुड़े प्रेम, शांति, आनंद और अपनत्व को भी रंगों में व्यक्त करने का प्रयास किया है. जन्माष्टमी के पावन अवसर पर आयुषी की ये कलाकृतियां भक्ति और कला के सुंदर संगम को दर्शाती हैं.

श्रीकृष्ण व राधा स्वरूप में दी सुंदर प्रस्तुति

नवभारत

इंदौर. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व बड़े ही हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ मनाया गया. इस अवसर पर विद्यालय परिसर को आकर्षक एवं रंग-बिरंगी सजावट से सजाया गया. विद्यार्थियों ने भगवान श्रीकृष्ण और राधा के स्वरूप में सुंदर प्रस्तुतियां दीं तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से सभी का मन मोह लिया. कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को भगवान श्रीकृष्ण के जीवन, उनके आदर्शों एवं उनके महान विचारों से भी अवगत कराया गया. बच्चों को बताया गया कि श्रीकृष्ण ने अपने जीवन के माध्यम से सत्य, धर्म, कर्म, प्रेम और न्याय का संदेश दिया. उनके द्वारा दिए गए उपदेश आज के समय में भी मानव जीवन को सही दिशा प्रदान करते हैं. कविता अर्गल ने बताया कि विद्यालय परिवार ने इस पावन अवसर पर सभी विद्यार्थियों को श्रीकृष्ण के विचारों को अपने जीवन में अपनाने और सदैव सत्य एवं धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी.

जीवन क्षणभंगुर है, इसलिए धर्म और आत्मकल्याण में समय दें

इंदौर. मनुष्य जीवन की दुर्लभता, आत्मकल्याण, संयम, श्रुतज्ञान, मानवता, समता एवं ईर्ष्या के त्याग का संदेश देते हुए सिद्धरत्न आचार्य विजयजी और विद्वदरत्न विजयजी ने केशरी वाटिका में चल रहे चातुर्मासिक प्रवचन के दौरान धर्मसभा में कहा कि अनादिकाल से आत्मा संसार के परिभ्रमण में भटक रही है और जीवन क्षण-प्रतिक्षण व्यतीत होता जा रहा है. मृत्यु निश्चित है, लेकिन वह किसी आहट या सूचना के साथ नहीं आती. व्यक्ति सोते, बैठते, चलते या बात करते हुए भी संसार से विदा हो सकता है. इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को यह समझना चाहिए कि जीवन का कोई भी क्षण निश्चित नहीं है. उन्होंने आत्मा, शरीर और मकान की अस्थायित्व की ओर ध्यान दिलाते हुए कहा कि वास्तव में 'मैं' आत्मा हूं और शरीर आत्मा का निवास है. जब सब कुछ अस्थायी है तो जीवन के उद्देश्य और परिणाम को समझकर कार्य करना आवश्यक है. आचार्य ने श्रद्धालुओं को समझाया कि जीवन क्षणभंगुर है, आयुष्य का कोई भरोसा नहीं है, इसलिए समय को प्रमाद में नहीं बल्कि धर्म, आराधना और आत्मकल्याण में लगाना चाहिए.

राधा-कृष्ण बने बच्चों ने दी मनमोहक प्रस्तुतियां

नवभारत

इंदौर. सिलिकॉन सिटी स्थित पिनेकल ड्रीम्स स्कूल में जन्माष्टमी के अवसर पर पूरा विद्यालय परिसर कृष्ण भक्ति और उल्लास से सराबोर नजर आया. नन्हे विद्यार्थियों ने राधा-कृष्ण की मनमोहक वेशभूषा में सजकर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं. भजनों और उत्साह से भरे गीतों पर बच्चों की नृत्य प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए.

राधा-कृष्ण के रंग में रंगा पिनेकल ड्रीम्स स्कूल

विद्यालय में भगवान श्रीकृष्ण के बाल स्वरूप को केंद्र में रखते हुए आकर्षक सजावट की गई. बच्चों के लिए आयोजित विभिन्न गतिविधियों में मटकी फोड़ कार्यक्रम विशेष आकर्षण रहा. कक्षा पहली से पांचवीं तक के विद्यार्थियों ने पूरे जोश के साथ मटकी फोड़ में हिस्सा लिया और श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं की झलक को जीवंत किया. कक्षा पहली के विद्यार्थियों के लिए स्टोरी टेलिंग प्रतियोगिता भी आयोजित की गई. बच्चों ने श्रीकृष्ण के जीवन और उनकी बाल लीलाओं से जुड़े प्रसंगों को अपनी कल्पनाशीलता और आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत किया. विद्यालय की प्रिंसिपल दीपा परियानी ने विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि त्योहारों को विद्यालयी गतिविधियों से जोड़ने का उद्देश्य बच्चों को भारतीय संस्कृति और परंपराओं से सहज रूप से परिचित कराना है. ऐसे आयोजन बच्चों में रचनात्मकता, आत्मविश्वास और संस्कारों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. बच्चों की रंगारंग प्रस्तुतियों, पारंपरिक गतिविधियों और उत्साह ने पूरे विद्यालय के माहौल को भक्तिमय बना दिया.

बात बिजनेस की | रील्स से प्रॉफिट 20 से 35% बढ़ा

छोटे शॉपकीपर्स के बीच प्रोडक्ट के रील्स प्रमोशन का क्रेज

इंदौर. अब हर प्रोडक्ट की मार्केटिंग और सेल सोशल मीडिया के बिना असंभव है. शहर में शॉप, होटल, कैफे और बुटीक चलाने वाले छोटे शॉप कीपर्स की मार्केटिंग और सेल अब काफी हद तक इंस्टाग्राम रील्स पर निर्भर है. सोशल मीडिया क्रिएटर्स ने लोकल मार्केटिंग का ऐसा चेहरा बदला है कि इससे छोटे शॉप कीपर्स का प्रॉफिट मार्जिन बढ़ा है.

कस्टमर इंस्टाग्राम पर रील्स देखने के बाद सीधे इंस्टा डीएम से भी प्रोडक्ट ऑर्डर करते है. सबसे अहम बात ये कि प्रोडक्ट की रील्स जितनी वायरल होगी और जितने व्यूज बटोरेगी उसकी सेल भी उतनी ज्यादा होगी. शॉप कीपर्स सिर्फ प्रोफेशनल और मँझे हुए सोशल मीडिया क्रिएटर्स से ही रील्स बनवा रहे है. रील्स क्रिएट करवाने के लिए लाखो रुपए खर्च कर रहे है। महारानी रोड़ पर बुटीक शॉप चलाने वाले सिद्धार्थ आणिया बताते है कि ऑफलाइन मार्केट में प्रोडक्ट की सेल लिमिटेड होती है, लेकिन इंदौरी फैशन क्वीन से ब्लॉग स्टाइल ट्रायऑन रील बनवाई, तो सात दिन में 100 से ज्यादा ऑर्डर आ गए. ज्यादातर ऑर्डर इंस्टा डीएम पर आए. इसमें इन्वेस्टमेंट जरूर है लेकिन ट्रेंड के साथ चलना चाहिए. एक रेस्टोरेंट संचालक ने बताया कि इंदौरी फूड लवर्स से 20 सेकंड की रील्स बनवाई थी. इसे 70 हजार व्यूज मिले और वीकेंड में बिक्री 30% तक बढ़ गई. अब हर एक डिश की रील्स बनवा रहा हूं.

शकील अंजुम

रील्स प्रमोशन से शॉपकीपर-क्रिएटर दोनों को प्रॉफिट

सोशल मीडिया एक्सपर्ट शकील अंजूम कहते हैं कि पहले सिर्फ बड़े बड़े ब्रांड्स ही सोशल मीडिया पर ब्रांड प्रमोशन करते थे, लेकिन अब 70% छोटे शॉप कीपर्स ने भी सोशल मीडिया मार्केटिंग के लिए बजट बना लिया है. शकील अंजूम का मानना है कि अब 40% ग्राहक गूगल सर्च से पहले इंस्टाग्राम रील्स पर देख लेते हैं कि कौनसा प्रोडक्ट कहां से खरीदना है. शहर में 10 हजार से ज्यादा एक्टिव माइक्रो इन्फ्लुएंसर है. इनके फॉलोवर्स की संख्या 10 हजार से 3 लाख तक है. रील्स प्रमोशन करने से क्रिएटर्स को भी इनकम हो रही है.

रील्स चार्ज, व्यूज और सेल

- प्रति रील्स चार्ज 2000 से 15000 हजार रुपए
- एक रील्स का औसत व्यूज 10 हजार से 1 लाख तक
- रील्स से सेल में बढ़ोतरी : 20 से 35%
- रील्स से ऑर्डर कन्वर्शन रेट 15 से 20%

सुरों की महफिल में गूंजे सुनहरे दौर के तराने

इंदौर. संगीत के क्षेत्र में निरंतर उत्कृष्ट और सुरीले आयोजन करने वाली शहर की प्रतिष्ठित संस्था आरजीपी प्योरली म्यूज़िकल के बैनर तले फिल्मी और गैर-फिल्मी ग़ज़लों व गीतों पर आधारित एक अनूठा संगीत संध्या कार्यक्रम बीती शाम स्थानीय प्रेस क्लब सभागार में पूरी भव्यता के साथ संपन्न हुआ. इस शानदार आयोजन ने शहर के तमाम गीत-ग़ज़ल प्रेमियों का दिल जीत लिया.

कार्यक्रम की शुरुआत से ही एक के बाद एक बेहतरीन प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया. वर्सेटाइल सिंगर दीपक सरमंडल ने संगीत के दिग्गज एस.डी. बर्मन और मन्ना डे के गाए गीतों को बेहद खूबसूरती से मंच पर उतारकर वाहवाही लूटी. इसके बाद सैय्यद अहमद अली ने स्वर कोकिला मो. रफ़ी साहब की चुनिंदा रचनाएं पेश कर महफिल में समां बांध दिया. शेखर शर्मा ने जगजीत सिंह की लोकप्रिय ग़ज़लों को बेहद सधे और सुरीले अंदाज़ में गाकर श्रोताओं से खूब दाद बटोरी. वहीं, संदीप पाडगिल ने महान गायक किशोर कुमार के अंदाज़ को हूबहू मंच पर जीवंत कर दिया, जिसे सुनकर पूरा सभागार झूम उठा. नरेंद्र ओझा ने मुकेश जी के अमर स्वरों को जीवंत करते हुए पुरानी यादें ताजा कर दीं, जबकि सारिका जोशी ने लता मंगेशकर के एकल गीतों के साथ-साथ युगल प्रस्तुतियों में भी अपनी लाजवाब गायकी का जादू बिखेरा. कार्यक्रम के अंत में संस्था के आयोजक एवं सूत्रधार राजेश गोधा परवाज़ ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी संगीत प्रेमियों और इस आयोजन को सफल बनाने में सहयोग देने वाले सभी साथियों के प्रति आभार व्यक्त किया.

राजेश गोधा